इकाई - IV

18. बाल–महाभारत

(उपवाचक पाठ)

महाभारत महर्षि व्यास द्वारा लिखी गयी कालजयी रचना है। पुराणों के अनुसार ब्रह्माजी से अत्रि, अत्रि से चन्द्रमा, चन्द्रमा से बुध, और बुध से इलानन्दन पुरूरवा का जन्म हुआ। पुरूरवा से आयु, आयु से राजा नहुष, और नहुष से ययाति उत्पन्न हुए। ययाति से पुरू हुए। पुरू के वंश में भरत और भरत के कुल में राजा कुरु हुए। कुरु के वंश में शान्तनु का जन्म हुआ। शान्तनु से गंगानन्दन भीष्म उत्पन्न हुए। उनके दो छोटे भाई और थे –चित्रांगद और विचित्रवीर्य। ये शान्तनु से सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। शान्तनु के मृत्यु के पश्चात भीष्म ने अविवाहित रह कर अपने भाई विचित्रवीर्य के राज्य का पालन किया। चित्रांगद बाल्यावस्था में ही चित्रांगद नामक गन्धर्व के द्वारा मारे गये। फिर भीष्म संग्राम में विपक्षी को परास्त करके काशी राज की दो कन्याओं –अंबिका और अंबालिका को हर लाये। वे दोनों विचित्रवीर्य की पत्नी हुईं। कुछ काल के बाद राजा विचित्रवीर्य राजयक्ष्मा से ग्रस्त हो स्वर्गवासी हो गये। तब सत्यवती की अनुमति से व्यासजी के द्वारा अम्बिका के गर्भ से राजा धृतराष्ट्र और अम्बालिका के गर्भ से पाण्डु उत्पन्न हुए। धृतराष्ट्र व गान्धारी दंपत्ति के सौ पुत्र हुए, जिनमें दुर्योधन सबसे बड़ा था और पाण्डु के युधिष्ठिर,भीम,अर्जुन,नकुल,सहदेव आदि पाँच पुत्र हुए। धृतराष्ट्र जन्म से ही अन्धे थे अतः उनकी जगह पर पाण्डु को राजा बनाया गया,इससे धृतराष्ट्र को सदा अपनी नेत्रहीनता पर दुख होता था। पाण्डु ने सम्पूर्ण भारतवर्ष को जीतकर कुरु राज्य की सीमाओं का यवनों के देश तक विस्तार कर दिया। एक बार राजा पाण्डु अपनी दोनों पत्नियों – कुन्ती तथा माद्री – के साथ आखेट के लिये वन गये। वहाँ उन्हें एक मृग का जोड़ा दिखायी दिया। पाण्डु ने तत्काल अपने बाण से उस मृग को घायल कर दिया। मरते हुये मृग रूपधारी निर्दोष ऋषि ने पाण्डु को शाप दिया, राजन! तुम्हारे समान क्रूर पुरुष इस संसार में कोई नहीं होगा। तुम्हें इसका परिणाम अवश्य भुगतना पड़ेगा। यही मेरा श्राप है।

इस श्राप से पाण्डु अत्यन्त दुःखी हुये और अपनी रानियों से बोले, हे देवियों! अब मैं अपनी समस्त वासनाओं का त्याग कर के इस वन में ही रहूँगा। तुम लोग हस्तिनापुर लौट जाओ। उनके वचनों को सुन कर दोनों रानियों ने दुःखी होकर कहा, नाथ! आप हमें भी वन में अपने साथ रखने

© SCERT not to be republished

की कृपा कीजिये। पाण्डु ने उनके अनुरोध को स्वीकार कर उन्हें भी वन में अपने साथ रहने की अनुमति दे दी। इसी दौरान राजा पाण्डु ने अमावस्या के दिन ऋषि–मुनियों को ब्रह्मा जी के दर्शनों के लिये जाते हुये देखा। उन्होंने उन ऋषि–मुनियों से स्वयं को साथ ले जाने का आग्रह किया। उनके इस आग्रह पर ऋषि–मुनियों ने कहा, राजन! कोई भी निःसन्तान पुरुष ब्रह्मलोक जाने का अधिकारी नहीं हो सकता। अतः हम आपको अपने साथ ले जाने में असमर्थ हैं। ऋषि–मुनियों की बात सुन कर पाण्डु अपनी पत्नी से बोले, हे कुन्ती! मेरा जन्म लेना ही वृथा हो रहा है क्योंकि सन्तानहीन व्यक्ति पितृ–ऋण, ऋषि–ऋण, देव–ऋण तथा मनुष्य–ऋण से मुक्ति नहीं पा सकता। क्या तुम पुत्र प्राप्ति के लिये मेरी सहायता कर सकती हो? कुन्ती बोली, हे आर्यपुत्र! दुर्वासा ऋषि ने मुझे ऐसा मन्त्र प्रदान किया है जिससे मैं किसी भी देवता का आह्वान करके मनोवांछित वस्तु प्राप्त कर सकती हूँ। आप आज्ञा करें मैं किस देवता को बुलाऊँ। इस पर पाण्डु ने धर्म को आमन्त्रित करने का आदेश दिया। धर्म ने कुन्ती को पुत्र प्रदान किया। जिसका नाम युधिष्ठिर रखा गया। कालान्तर में पाण्डु ने कुन्ती को पुनः दो बार वायुदेव तथा इन्द्रदेव को आमन्त्रित करने की आज्ञा दी। वायुदेव से भीम तथा इन्द्र से अर्जुन की उत्पत्ति हुई। तत्पश्चात् पाण्डु की आज्ञा से कुन्ती ने माद्री को उस मन्त्र की दीक्षा दी। माद्री ने अश्विनी कुमारों को आमन्त्रित किया और नकुल तथा सहदेव का जन्म हुआ। किंतु, पांडु महाराज को श्राप का परिणाम भुगतना पड़ा और जल्द ही उनकी मृत्यु हो गयी। माद्री उनके साथ सती हो गई किन्तु पुत्रों के पालन–पोषण के लिये कुन्ती हस्तिनापुर लौट आयी। वहाँ रहने वाले ऋषि मुनि पांडवों को राजमहल छोड़कर आ गये। ऋषि मुनि तथा कुन्ती के कहने पर सभी ने पांडवों को पाण्डु का पुत्र मान लिया और उनका स्वागत किया।

जब कुन्ती का विवाह नहीं हुआ था, उसी समय (सूर्य के अंश से) उनके गर्भ से कर्ण का जन्म हुआ था। परन्तु लोक लाज के भय से कुन्ती ने कर्ण को एक बक्से में बन्द करके गंगा नदी में बहा दिया। कर्ण गंगाजी में बहता हुआ जा रहा था कि महाराज धृतराष्ट्र के सारथी अधिरथ और उनकी पत्नी राधा ने उसे देखा और उसे गोद ले लिया और उसका लालन–पालन करने लगे। कुमार अवस्था से ही कर्ण की रुचि अपने पिता अधिरथ के समान रथ चलाने की बजाय युद्धकला में अधिक थी। कर्ण और उसके पिता अधिरथ आचार्य द्रोण से मिले जो कि उस समय युद्धकला के सर्वश्रेष्ठ आचार्यों में से एक थे। द्रोणाचार्य उस समय कुरु राजकुमारों को शिक्षा दिया करते थे। उन्होंने कर्ण

© SCERT not to be republished

को शिक्षा देने से मना कर दिया क्योंकि कर्ण एक सारथी पुत्र था, और द्रोण केवल क्षत्रियों को ही शिक्षा दिया करते थे। द्रोणाचार्य की असम्मति के उपरान्त कर्ण ने परशुराम से सम्पर्क किया जो कि केवल ब्राह्मणों को ही शिक्षा दिया करते थे। कर्ण ने स्वयं को ब्राह्मण बताकर परशुराम से शिक्षा का आग्रह किया। परशुराम ने कर्ण का आग्रह स्वीकार किया और कर्ण को अपने समान ही युद्धकला और धनुर्विद्या में निष्णात किया। इस प्रकार कर्ण परशुराम का एक अत्यंत परिश्रमी और निपुण शिष्य बना। कर्ण दुर्योधन के आश्रय में रहता था। दैवयोग तथा शकुनि के छल कपट से कौरवों और पाण्डवों में बैर की आग प्रज्वलित हो उठी। दुर्योधन बड़ी खोटी बुद्धि का मनुष्य था। उसने शकुनि के कहने पर पांडवों को बचपन में कई बार मारने का प्रयत्न किया। युवावस्था में आकर जब गुणों में उससे अधिक श्रेष्ठ युधिष्ठर को युवराज बना दिया गया तो शकुनि ने लाक्ष के बने हुए घर में पाण्डवों को रखकर आग लगाकर उन्हें जलाने का प्रयत्न किया किन्तु विदुर की सहायता से पाँचों पाण्डव अपनी माता के साथ उस जलते हुए घर से बाहर निकल आये। वहाँ से एकचक्रा नगरी में जाकर वे मुनि के वेष में एक ब्राह्मण के घर में निवास करने लगे। फिर बक नामक राक्षस का वध करके व्यास जी के कहने पर वे पांचाल–राज्य में, जहाँ द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला था,गए। पांचाल–राज्य में अर्जुन के लक्ष्य–भेदन के कौशल से मत्स्यभेद होने पर पाँचों पाण्डवों ने द्रौपदी को पत्नी रूप में प्राप्त किया।

द्रौपदी स्वयंवर के पहले विदुर को छोड़ कर, सभी पांडवों को मृत समझने लगे और इस कारण धृतराष्ट्र ने शकुनि के कहने पर दुर्योधन को युवराज बना दिया। द्रौपदी स्वयंवर के तत्पश्चात दुर्योधन आदि को पांडवों के जीवित होने का पता चला। पांडवों ने कौरवों से अपना राज्य मांगा परन्तु गृहयुद्ध के संकट से बचने के लिए युधिष्ठर ने कौरवों द्वारा दिए खण्डहर स्वरुप खाण्डववन को आधे राज्य के रुप में प्राप्त किया। पाण्डुकुमार अर्जुन ने श्रीकृष्ण के साथ खाण्डववन को जला दिया और इन्द्र के द्वारा की हुई वृष्टि का अपने बाणों के (छत्राकार) बाँध से निवारण करते हुए अग्नि को तृप्त किया। वहाँ अर्जुन और कृष्ण जी ने समस्त देवताओं को युद्ध में परास्त कर दिया। इसके फलस्वरुप अर्जुन नेअग्निदेव से दिव्य गाण्डीव धनुष और उत्तम रथ प्राप्त किया और कृष्ण जी ने सुदर्शनचक्र प्राप्त किया था। उन्हें युद्ध में भगवान् कृष्ण–जैसे सारथी मिले थे तथा उन्होंने आचार्य द्रोण से ब्रह्मास्त्र आदि दिव्य आयुध और कभी नष्ट न होने वाले बाण प्राप्त किये थे। इन्द्र अपने पुत्र अर्जुन की वीरता देखकरअति प्रसन्न हुए। इन्द्र के कहने पर देव शिल्पी विश्वकर्मा और मय दानव ने मिलकर खाण्डववन को इन्द्रपुरी

© SCERT not to be republished

जितने भव्य नगर मे निर्मित कर दिया, जिसे इन्द्रप्रस्थ नाम दिया गया।

सभी पाण्डव सब प्रकार की विद्याओं में प्रवीण थे। पाण्डवों ने संपूर्ण दिशाओं पर विजय पाई और युधिष्ठिर राज्य करने लगे। उन्होंने प्रचुर सुवर्ण राशि से परिपूर्ण राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान किया। उनका यह वैभव दुर्योधन के लिये असह्य हो उठा। उसने अपने भाई दु:शासनऔर वैभव प्राप्त सुहृद् कर्ण के कहने से शकुनि को साथ ले, द्यूत–सभा में जुए में प्रवृत्त होकर, युधिष्ठिर को उनके भाइयों,द्रौपदी और उनके राज्य को कपट–द्यूत के द्वारा हँसते–हँसते जीत लिया। दुर्योधन ने कुरु राज्य सभा मे द्रौपदी का बहुत अपमान किया,उसे निर्वस्त्र करने का प्रयास किया। श्रीकृष्ण ने उनकी लाज बचाई। तत्पश्चात द्रौपदी सभी लोगों को श्राप देने ही वाली थी, परन्तु गांधारी ने आकर ऐसा होने से रोक दिया। जुए में परास्त होकर युधिष्ठिर अपने भाइयों के साथ वन में चले गये। वहाँ उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार बारह वर्ष व्यतीत किये। वे वन में भी पहले ही की भाँति प्रतिदिन बहुसंख्यक ब्राह्मणों को भोजन कराते थे। (एक दिन उन्होंने) अठासी हजार द्विजों सहित दुर्वासा मुनि को (श्रीकृष्ण–कृपा से) परितृप्त किया। वहाँ उनके साथ उनकी पत्नी द्रौपदी और पुरोहित धौम्यजी भी थे।

बारहवाँ वर्ष बीतने पर वे विराट नगर में गये। वहाँ युधिष्ठिर सबसे अपरिचित रहकर 'कंक' नामक ब्राह्मण के रूप में रहने लगे। भीमसेन रसोइया बने थे। अर्जुन ने अपना नाम 'बृहन्नला' रखा था। पाण्डव पत्नी द्रौपदी रनिवास में सैरन्ध्री के रूप में रहने लगी। इसी प्रकार नकुल–सहदेव ने भी अपने नाम बदल लिये थे। भीमसेन ने रात्रिकाल में द्रौपदी का सतीत्व–हरण करने की इच्छा रखने वाले कीचक को मार डाला। तत्पश्चात कौरव विराट की गौओं को हरकर ले जाने लगे, तब उन्हें अर्जुन ने परास्त किया। उस समय कौरवों ने पाण्डवों को पहचान लिया। श्रीकृष्ण की बहन सुभद्रा ने अर्जुन से अभिमन्यु नामक पुत्र को उत्पन्न किया था उसे राजा विराट ने अपनी कन्या उत्तरा ब्याह दी।

धर्मराज युधिष्ठिर सात अक्षौहिणी सेना के स्वामी होकर कौरवों के साथ युद्ध करने को तैयार हुए। पहले भगवान् श्रीकृष्ण परम क्रोधी दुर्योधन के पास दूत बनकर गये। उन्होंने ग्यारह अक्षौहिणी सेना के स्वामी राजा दुर्योधन से कहा–

'राजन्! तुम युधिष्ठिर को आधा राज्य दे दो या उन्हें पाँच ही गाँव अर्पित कर दो; नहीं तो उनके साथ युद्ध करो।'

श्रीकृष्ण की बात सुनकर दुर्योधन ने कहा– 'मैं उन्हें सुई की नोक के बराबर भूमि भी नहीं दूँगा; हाँ, उनसे युद्ध अवश्य करूँगा।'

ऐसा कहकर वह भगवान श्रीकृष्ण को बंदी बनाने के लिये उद्यत हो गया। उस समय राजसभा में भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने परम दुर्धर्ष विश्वरूप का दर्शन कराकर दुर्योधन को भयभीत कर दिया। फिर विदुर ने अपने घर ले जाकर भगवान का पूजन और सत्कार किया।

तदनन्तर वे युधिष्ठिर के पास लौट गये और बोले–'महाराज! आप दुर्योधन के साथ युद्ध कीजिये'

युधिष्ठिर और दुर्योधन की सेनाएँ कुरुक्षेत्र के मैदान में जा डटीं। अपने विपक्ष में पितामह भीष्म तथा आचार्य द्रोण आदि गुरुजनों को देखकर अर्जुन युद्ध से विरत हो गये, तब भगवान् श्रीकृष्ण ने उनसे कहा–'पार्थ! भीष्म आदि गुरुजन शोक के योग्य नहीं हैं। मनुष्य का शरीर विनाशशील है, किंतु आत्मा का कभी नाश नहीं होता। यह आत्मा ही परब्रह्म है।'

'मैं ब्रह्म हूँ'– इस प्रकार तुम उस आत्मा को समझो। कार्य की सिद्धि औरअसिद्धि में समानभाव से रहकर कर्मयोग का आश्रय ले क्षात्रधर्म का पालन करो।'

श्रीकृष्ण के ऐसा कहने पर अर्जुन रथारूढ़ हो युद्ध में प्रवृत्त हुए। उन्होंने शंखध्वनि की। दुर्योधन की सेना में सबसे पहले पितामह भीष्म सेनापति हुए। पाण्डवों के सेनापति शिखण्डी थे। इन दोनों में भारी युद्ध छिड़ गया। भीष्म सहित कौरव पक्ष के योद्धा उस युद्ध में पाण्डव–पक्ष के सैनिकों पर प्रहार करने लगेऔर शिखण्डी आदि पाण्डव– पक्ष के वीर कौरव–सैनिकों को अपने बाणों का निशाना बनाने लगे।

कौरव और पाण्डव–सेना का वह युद्ध, देवासुर–संग्राम के समान जान पड़ता था। आकाश में खड़े होकर देखने वाले देवताओं को वह युद्ध बड़ा आनन्ददायक प्रतीत हो रहा था। भीष्म ने दस दिनों तक युद्ध करके पाण्डवों की अधिकांश सेना को अपने बाणों से मार गिराया।

दसवें दिन अर्जुन ने वीरवर भीष्म पर बाणों की बड़ी भारी वृष्टि की। इधर द्रुपद की प्रेरणा से शिखण्डी ने भी पानी बरसाने वाले मेघ की भाँति भीष्म पर बाणों की झड़ी लगा दी। दोनों ओर के हाथीसवार, घुड़सवार, रथी और पैदल एक–दूसरे के बाणों से मारे गये। भीष्म की मृत्यु उनकी इच्छा के अधीन थी।जब पांडवों को ये समझ में आ गया कि भीष्म के रहते वे इस युद्ध को नहीं जीत सकते तो श्रीकृष्ण के सुझाव पर उन्होंने भीष्म पितामह से ही उनकी मृत्यु का उपाय पूछा। उन्होंने कहा कि

© SCERT not to be republished

जब तक मेरे हाथ में शस्त्र है तब तक महादेव केअतिरिक्त मुझे कोई नहीं हरा सकता। उन्होंने ने ही पांडवों को सुझाव दिया कि शिखंडी को सामने कर के युद्ध लड़े। वे जानते थे कि शिखंडी पूर्व जन्म में अम्बा थी इसलिए वे उसे कन्या ही मानते थे। दसवें दिन के युद्ध में अर्जुन ने शिखंडी को आगे अपने रथ पर बिठाया। शिखंडी को आगे देख कर भीष्म ने अपना धनुष त्याग दिया। उनके शस्त्र त्यागने के बाद अर्जुन ने उन्हें बाणों की शय्या पर सुला दिया। वे उत्तरायण की प्रतीक्षा में भगवान् विष्णु का ध्यान और स्तवन करते हुए समय व्यतीत करने लगे। भीष्म के बाण–शय्या पर गिर जाने के बाद जब दुर्योधन शोक से व्याकुल हो उठा, तब आचार्य द्रोण ने सेनापतित्व का भार ग्रहण किया। उधर हर्ष मनाती हुई पाण्डवों की सेना में धृष्टद्युम्न सेनापति हुए। उन दोनों में बड़ा भयंकर युद्ध हुआ, जो यमलोक की आबादी को बढ़ाने वाला था। विराट और द्रुपद आदि राजा द्रोणरूपी समुद्र में डूब गये। उस समय द्रोण काल के समान जान पड़ते थे। इतने ही में उनके कानों में यह आवाज आयी कि 'अश्वत्थामा मारा गया'। इतना सुनते ही आचार्य द्रोण ने अस्त्र–शस्त्र त्याग दिये। ऐसे समय में धृष्टद्युम्न के बाणों से आहत होकर वे पृथ्वी पर गिर पड़े

द्रोण बड़े ही दुर्धर्ष थे। वे सम्पूर्ण क्षत्रियों का विनाश करके पाँचवें दिन मारे गये। दुर्योधन पुन: शोक से आतुर हो उठा। उस समय कर्ण उसकी सेना का कर्णधार हुआ्। पाण्डव–सेना का आधिपत्य अर्जुन को मिला। कर्ण और अर्जुन में भाँति–भाँति के अस्त्र–शस्त्रों की मार–काट से युक्त महा भयानक युद्ध हुआ, जो देवासुर–संग्राम को भी मात करने वाला था। कर्ण और अर्जुन के संग्राम में कर्ण ने अपने बाणों से शत्रु–पक्ष के बहुत–से वीरों का संहार कर डाला; यद्यपि युद्ध गतिरोधपूर्ण हो रहा था लेकिन कर्ण तब उलझ गया जब उसके रथ का एक पहिया धरती में धँस गया (धरती माता के श्राप के कारण)। वह अपने को दैवीय अस्त्रों के प्रयोग में भी असमर्थ पाता है, जैसा कि उसके गुरु परशुराम का श्राप था। तब कर्ण अपने रथ के पहिए को निकालने के लिए नीचे उतरता है और अर्जुन से निवेदन करता है कि वह युद्ध के नियमों का पालन करते हुए कुछ देर के लिए उस पर बाण चलाना बंद कर दे। तब श्रीकृष्ण, अर्जुन से कहते हैं कि कर्ण को कोई अधिकार नहीं है कि वह अब युद्ध नियमों और धर्म की बात करे, जबकि स्वयं उसने भी अभिमन्यु वध के समय किसी भी युद्ध नियम और धर्म का पालन नहीं किया था। उन्होंने आगे कहा कि तब उसका धर्म कहाँ गया था जब उसने दिव्य–जन्मा द्रौपदी का पूरी कुरु राजसभा के समक्ष अपमान किया था। द्युत–क्रीड़ा भवन में उसका धर्म कहाँ गया

© SCERT not to be republished

था। इसलिए अब उसे कोई अधिकार नहीं कि वह किसी धर्म या युद्ध नियम की बात करे और उन्होंने अर्जुन से कहा कि अभी कर्ण असहाय है (ब्राह्मण का श्राप फलीभूत हुआ) इसलिए वह उसका वध करे। श्रीकृष्ण कहते हैं कि यदि अर्जुन ने इस निर्णायक मोड़ पर अभी कर्ण को नहीं मारा तो संभवतः पांडव उसे कभी भी नहीं मार सकेंगे और यह युद्ध कभी भी नहीं जीता जा सकेगा। तब, अर्जुन ने एक दैवीय अस्त्र का उपयोग करते हुए कर्ण का सिर धड़ से अलग कर दिया। कर्ण के शरीर के भूमि पर गिरने के बाद एक ज्योति कर्ण के शरीर से निकली और सूर्य में समाहित हो गयी। तदनन्तर राजा शल्य कौरव–सेना के सेनापति हुए, किंतु वे युद्ध में आधे दिन तक ही टिक सके। दोपहर होते–होते राजा युधिष्ठिर ने उन्हें मार दिया।

दुर्योधन की प्रायः सारी सेना युद्ध में मारी गयी थी। अंत में उसका भीमसेन के साथ युद्ध हुआ। उसने पाण्डव–पक्ष के पैदल आदि बहुत–से सैनिकों का वध करके भीमसेन पर धावा किया। उस समय गदा से प्रहार करते हुए दुर्योधन के अन्य छोटे भाई भी भीमसेन के हाथों मारे गये थे। महाभारत–संग्राम के उस अठारहवें दिन रात्रिकाल में महाबली अश्वत्थामा ने पाण्डवों की सोयी हुई एक अक्षौहिणी सेना को सदा के लिये सुला दिया। उसने द्रौपदी के पाँचों पुत्रों, उसके पांचाल देशीय बन्धुओं तथा धृष्टद्युम्न को भी जीवित नहीं छोड़ा। द्रौपदी पुत्रहीन होकर रोने–बिलखने लगी। तब अर्जुन ने सींक के अस्त्र से अश्वत्थामा को परास्त करके उसके मस्तक की मणि निकाल ली। (उसे मारा जाता देख द्रौपदी ने ही अनुनय–विनय करके उसके प्राण बचाये)। इतने पर भी दुष्ट अश्वत्थामा ने उत्तरा के गर्भ को नष्ट करने के लिये उस पर अस्त्र का प्रयोग किया। वह गर्भ उसके अस्त्र से प्रायः दग्ध हो गया था; किंतु भगवान् श्रीकृष्ण ने उसको पुनः जीवन–दान दिया। उत्तरा का वही गर्भस्थ शिशु आगे चलकर राजा परीक्षित के नाम से विख्यात हुआ। कृतवर्मा, कृपाचार्य तथा अश्वत्थामा–ये तीन कौरव पक्षीय वीर उस संग्राम से जीवित बचे। दूसरी ओर पाँच पाण्डव, सात्यकि तथा भगवान श्रीकृष्ण–ये सात ही जीवित रह सके; दूसरे कोई नहीं बचे। उस समय सब ओर अनाथ स्त्रियों का आर्तनाद व्याप्त हो रहा था। भीमसेन आदि भाइयों के साथ जाकर युधिष्ठिर ने उन्हें सान्त्वना दी तथा रणभूमि में मारे गये सभी वीरों का दाह–संस्कार करके उनके लिये जलांजलि दे, धन आदि का दान किया। तत्पश्चात कुरुक्षेत्र में शरशय्या पर आसीन शान्तनुनन्दन भीष्म के पास जाकर युधिष्ठिर ने उनसे समस्त शान्तिदायक धर्म, राजधर्म (आपद्धर्म), मोक्ष धर्म तथा दानधर्म की बातें सुनीं। फिर वे

© SCERT not to be republished

राजसिंहासन पर आसीन हुए। इसके बाद उन शत्रुमर्दन राजा नेअश्वमेध यज्ञ करके उसमें ब्राह्मणों को बहुत धन दान किया। तदनन्तर द्वारका से लौटे हुए अर्जुन के मुख से मूसलकाण्ड के कारण प्राप्त हुए शाप से पारस्परिक युद्ध द्वारा यादवों के संहार का समाचार सुनकर युधिष्ठिर ने परीक्षित को राजासन पर बिठाया और स्वयं भाइयों के साथ महाप्रस्थान कर स्वर्गलोक को चले गये।

जब युधिष्ठिर राजसिंहासन पर विराजमान हो गये, तब धृतराष्ट्र गृहस्थ–आश्रम से वानप्रस्थ–आश्रम में प्रविष्ट हो वन में चले गये। (ऋषियों के एक आश्रम से दूसरे आश्रमों में होते हुए वे वन को गये।) उनके साथ देवी गान्धारी और पृथा (कुन्ती) भी थीं। विदुर जी दावानल से दग्ध हो स्वर्ग सिधारे। इस प्रकार भगवान् विष्णु ने पृथ्वी का भार उतारा और धर्म की स्थापना तथा अधर्म का नाश करने के लिये पाण्डवों को निमित्त बनाकर दानव–दैत्य आदि का संहार किया।

इस प्रकार महाभारत कथा का मूल उद्देश्य अधर्म का नाश कर धर्म की स्थापना करना था। इस कथा से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति चाहे कितना भी वीर, शूर, धनी, दानी क्यों न हो, अगर वह धर्म का पालन नहीं करेगा तो उसका विनाश निश्चित ही है।

© SCERT not to be republished

प्रश्न

1. महाराज पांडु के कितने पुत्र थे? उनकी क्या विशेषता थी?
2. पांडवों को अंत में कौरवों से युद्ध क्यों करना पड़ा?
3. महाभारत युद्ध में श्रीकृष्ण की भूमिका के बारे में बताइए।
4. महाभारत का युद्ध धर्म की स्थापना के लिए हुए था– सिद्ध कीजिए।
5. महाभारत की कथा से हमें क्या सीख मिलती है?

शब्दकोश

यहाँ आपके लिए एक छोटा सा शब्दकोश दिया गया है। इस शब्दकोश में वे शब्द हैं जो विभिन्न पाठों में आए हैं और आपके लिए नए हो सकते हैं। किसी-किसी शब्द के कई अर्थ होते हैं। पाठ के संदर्भ से जोड़कर आप यह अनुमान खुद लगा सकते हैं कि कौन सा अर्थ ठीक है।

तुम देखोगे कि शब्द के अर्थ से पहले विभिन्न प्रकार के अक्षर-संकेत दिए गए हैं। इन संकेतों से हमें शब्दों की व्याकरण संबंधी जानकारी मिलती है। नीचे दी गई सूची की मदद से आप इन अक्षर-संकेतों को समझ सकते हैं–

अ.	–	अव्यय	अ.क्रि.	–	अकर्मक क्रिया
क्रि.	–	क्रिया	स.क्रि.	–	सकर्मक क्रिया
सं.	–	संज्ञा	वि.	–	विशेषण
पु.	–	पुल्लिग	फ़ा	–	फ़ारसी
स्त्री.	–	स्त्रीलिंग			

अतिशय-(वि.)बहुत

अधित्यकाएँ-(स्त्री.)पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि, 'टेबललैंड'

अप्रतिभ-(वि.)अन्यमनस्क, उदास, निराश, हतप्रभ

आकृष्ट-(वि.)आकर्षित

आजानुलंबित केश-(वि.)घुटनों तक लंबे बाल

आर्तक्रंदन-(पु.)दर्द भरी आवाज़ में रोना

आवन-(स.क्रि.)आना

आविर्भूत-वि.(सं.)प्रकट, उत्पन्न

इंद्रनील-(पु.)नीलकांत मणि, नीलम, नीलमणि, इंद्र का प्रिय रत्न

इल्ली-(स्त्री.)तितली के बच्चों का अंडे से निकलने वाला बाद का रूप

उन्मुक्त-वि.(सं.)बंधन रहित, स्वतंत्र

उपत्यकाएँ-(स्त्री.)पहाड़ के पास की भूमि, तराई, घाटी

उमग्यो-(क्रि.)उमड़ना

उरिन-(वि.) ऋण मुक्त, उऋण

कटुक-वि(.सं.)कड़वी, कटु

कर्कश-(वि.)कठोर, उग्र

कर्णवेध-(वि.) कान छेदने का संस्कार या रस्म

कार्तिकेय-(सं.)कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न शिव के पुत्र, देवताओं के सेनापति

© SCERT not to be republished

कुब्जा-वि.स्त्री.(सं.)कुबड़ी, कंस की एक कुबड़ी दासी जिसकी टेढ़ी पीठ कृष्ण ने सीधी की थी

केका-स्त्री.(सं.) मोर की बोली

क्रूर-वि.(सं.)-निर्दय, हिंसक, कठोर

क्वार-(वि.)महीने का नाम-आश्विन

क्षीण-(वि.)दुर्बल, पतला

गरूर-पु.(अ.)गर्व, घमंड

घाम-(पु.)धूप

घेऊर-(स्त्री.)ताल में उपजनेवाली घासें

चंचु-प्रहार-चोंच से चोट करना

चिकोटी-(स्त्री.)चुटकी

छंद-(पु.)वर्ण, मात्रा, यति आदि के नियमों से युक्त वाक्य, अभिलाषा, इच्छा,अभिप्राय

डोंगर-(पु.)टीला, पहाड़ी

तजि-(स.क्रि.)तजना, छोड़ना

तरबतर-(वि.)लथपथ, डूबे हुए

तुषार-(सं.)बरफ़ 'हिम' का टुकड़ा

थामना-(स.क्रि.)पकड़ना

दस्तूर-(फ़ा.)तरीका, रीति

दामिन-(स्त्री.) दामिनी, बिजली

दुकेली-(वि.)जो अकेली न हो, जिसके साथ कोई और हो

द्युति-स्त्री.(सं.)चमक

द्विशाखा -(वि.)दो शाखाएँ

धकियाना-(स.क्रि.) धक्का देना

नवागंतुक-(वि.)नया-नया आया हुआ, नया अतिथि

निकसार-(पु.)निकास, निकलने का द्वार या मार्ग

निश्चेष्ट-(सं.)बिना प्रयास के, चेष्टा रहित, अचेत

निषेध-(अ.क्रि.)नकारना, मना करना

पक्षी-शावक-पु.(सं.)चिड़िया का बच्चा

परकाज-(वि.)उपकार, दूसरे का काम

पिंजरबद्ध-वि.(सं.)पिंजरे में बंद

पुनरुद्धार-(अ.क्रि)फिर से ऊपर उठाना, दोबारा उद्धार करना

प्रतिदान-(पु.)बदले में

फोकट-(वि.) मूल्यरहित, मुफ़्त

बंकिम-(वि.)बाँका, टेढ़ा

बंधुर-पु.(सं.)मुकुट

बदहवास-(वि.)घबराया हुआ

बलिहारी-(स्त्री.)निछावर होना

बारहा-अ.(फ़ा)बार-बार, अनेक बार

भद्द-(स्त्री.)उपहास, बुरी दशा

भाव-भंगी-(वि.)हाव-भाव

मंद्र-वि.(सं.)सुस्त, गंभीर, धीमा

मार्जारी-(स्त्री.)मादा बिल्ली

© SCERT not to be republished

मुदित-(वि.)प्रसन्न

मूजी-वि.(अ.)कंजूस

मृदुल-(पु.)कोमल

मेह-(पु.)मेघ, बादल

मोथा, साई (पु.) खेतों में उपजनेवाली
बनप्याज घासों के नाम
नागर मोथा

विज्ञापित-(वि.)विज्ञापन में दिखाया गया

विनिहित-(वि.)रखा हुआ

विशूचिका-(स्त्री.)संक्रामक रोग, हैज़ा, चेचक

विस्मय-(वि.)आश्चर्य

व्यसन-पु.(सं.)बुरी आदत

शरद-(वि.)वर्षा के बाद और शिशिर ऋतु के पहले की ऋतु

संकीर्ण-वि.(सं.)सँकरा, छोटा, संकुचित

संगमरमर-(पु.) मुख्य रूप से मकराना, राजस्थान में पाए जाने वाला एक सफ़ेद सुंदर पत्थर जो इमारतों में लगाया जाता है।

संभ्रांत-(वि.)कुलीन, अच्छे कुल का

संशय-(वि.)आशंका, संदेह

सचहिं-(स.क्रि.)संचय, जमा करना

सरवर-(पु.)नदी

सरसब्ज़-(वि.)हराभरा

सरसाम-(पु.)सिहरन और कँपकपी के साथ बच्चों को होनेवाला बुखार

साहबी ठिकानों-(वि.)समृद्ध/अमीर लोगों के घर

सीत-(स्त्री.)ओस के कण, शरद ऋतु

सुजान-(पु.)बुद्धिमान

सुणा-(स.क्रि.)सुनना

सुरम्य-वि.(सं.)मनोहर, अति रमणीय, सुंदर स्थान

सुहावन-(वि.)सुंदर

सूमो-(पु.)जापानी पहलवान

स्तबक-पु.(सं.)फूलों का गुच्छा

स्थिर-(वि.) गति रहित, अचल

स्नेहसिक्त-(वि.)प्रेम से भरा हुआ, स्नेह से भीगा हुआ

स्मृति-(स.क्रि.)याद

स्वपन-(पु.)स्वप्न, सपना

हर्ष गद्गद-पु.(सं.)प्रसन्नता से भरा हुआ

होड़ा-होड़ी-(स्त्री.)प्रतिस्पर्धा, दूसरे से आगे बढ़ जाने की चाह

SCERT not to be republished

पेड़ अब भी आदिवासी हैं...

हो गयी सदियाँ, मगर फिर भी
है अजूबा, पेड़ अब भी आदिवासी हैं...

पेड़ खालिस पेड़ हैं अब भी,
पेड़ मुल्ला है, न पंडित, न पासी है
पेड़ अब भी आदिवासी हैं...

जंगलों में या नगर में हो,
दूर घर से या कि घर में हो,

हैं जड़ें हर वक्त धरती में,
इस सदी के होश आने की दवा-सी हैं
पेड़ अब भी आदिवासी हैं...

साफ़ दिल यूँ सोचते हैं जो,
फूल-पत्ते बोलते हैं वो,

छोड़ते हैं ओढ़कर ऋतुएँ,
आत्मा के अमर रहने की कथा-सी हैं
पेड़ अब भी आदिवासी हैं...

घुट रहा है ज़िंदगी का दम,
पेड़ इतने हो गये हैं कम,

खो चुकी अपना हरापन जो,
उन अभागो जर्द नस्लों को उदासी है
पेड़ अब भी आदिवासी हैं...

पेड़-पौधे लगाओ-धरती को बचाओ